P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रामचरितमानस में सौन्दर्य–विधान

अरुण कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
सम्भल

सारांश

समस्त हिन्दी वाड्0मय में भक्ति साहित्य का अपना विशेष स्थान है। यदि हिन्दी वाड्0मय शरीर है तो भक्ति साहित्य उसकी आत्मा है। भक्ति काल के चार स्तम्भ कबीर, सूर, तुलसी एवं जायसी के काव्य को यदि हिन्दी साहित्य से अलग कर दिया जाय तो वह निष्प्राण हो जायेगा। इन चारों कवियों में सर्वाधिक लोकप्रिय कवि गोस्वामी तुलसीदास हुए और उनकी कृतियों में सर्वाधिक लोकप्रिय होने का श्रेय रामचरितमानस को मिला। यह समस्त भक्ति काव्य का मेरुदण्ड है। इसे ही जनमानस के कण्ठहार बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस रचना में गोस्वामी तुलसी दास की समस्त प्रतिभा का निदर्शन होता है। भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से यह काव्य अत्यन्त सफल महाकाव्य है। रामचरितमानस के माध्यम से गोस्वामी जी ने अपने लोकमंगल की भावना एवं मर्यादावादी दृष्टिकोण के द्वारा जो तत्युगीन जनमानस को आदर्शवादी संदेश देना चाहा वे केवल समकालीन ही नहीं अपितु सार्वकालिक एवं प्रासंगिक हैं। आदर्शमय राम के चरित्र में शील, शक्ति एवं सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय है। रामचरित मानस में मुख्य कथा के साथ–साथ अनेक पौराणिक कथाएँ समाज के एक–एक पहलू को गहराई से चित्रित एवं उनकी कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हैं। भाव, विचार, कल्पना एवं शिल्प–सौन्दर्य की दृष्टि से तुलसी का रामचरितमानस श्रेष्ठ प्रबन्ध काव्य ही नहीं अपितु आदर्शवादी मूल्यों से सम्पृक्त अत्यन्त लोकप्रिय महाकाव्य भी है।

मुख्य शब्द : वाड्0मय, निष्प्राण, कण्ठहार, लोकमंगल, शिल्प, स्वान्तः सुखाय, गुलदस्ता, स्फुरित, गृहस्थ, प्रादुर्भाव, मर्मस्थिति, रसानुभूति, तन्मयता, वात्सल्य, करुण, संयोग–वियोग, प्रबन्धात्मकता।

प्रस्तावना

कवि स्वभावतः अत्यन्त भावुक, सहज, एवं सहृदयी होता है। हृदय से निकली कविता ही सहज सौन्दर्य से सम्पृक्त हो सकती है। वही कविता धर्म, जाति एवं क्षेत्रगत संकीर्णता से बद्ध समाज को मुक्त कर सर्वमांगल्य समाज की संकल्पना को सकार कर सकती है, जो सहज व सरल हृदय से स्वभावतः निकलकर लोकरक्षार्थ एवं लोकरंजनार्थ सृजित होती है। महर्षि वाल्मीकि सहित अनेक कवि इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। महर्षि बाल्मीकि का सहज करुण हृदय यदि रति कीड़ारत क्रौंच पक्षी के वध से द्रवित न हुआ होता तो **प्रथम श्लोक**[1] की उत्पत्ति न हुई होती।

महात्मा तुलसीदास का मुख्य उद्देश्य काव्य सृजन न था। कविता उनके भक्ति की साधना थी। भक्ति की साधना में काव्य की पियूष धारा सहज ही प्रवाहित हुई है। इसीलिए उनके काव्य में आध्यात्मिक सौन्दर्य की छाया में अधिभौतिक सौन्दर्य स्वतः ही प्रस्फुटित होता चला गया है। उनके काव्य में न तो वीरगाथा काल के चारणों सी चाटुकारिता है और न ही रीति कालीन कवियों सा काम लोलुप मांसल सौन्दर्य का चित्रण है। 'तुलसी की गम्भीर वाणी शब्दों की कलाबाजी, उक्तियों की झूठी तड़क–भड़क आदि खिलवाड़ों में नही उलझी है। उनकी कविता स्वान्तः सुखाय से आरम्भ होकर परान्तः सुखाय तक की यात्रा सफलता पूर्वक तय करती है। इसी भक्ति यात्रा के काव्य सृजन में उन्होंने 'रामचरित मानस, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, वरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्नावली, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावाली, विनय पत्रिका, सतसई रामायण, कुडलिया रामायण, रामशलाका, संकटमोचन, छप्पय रामायण, कवित्त रामायण, कलि धर्माधर्म निरूपण आदि श्रेष्ठ काव्यों की रचना की। ये काव्य भाषा–भाव एवं सौन्दर्य की दृष्टि से एक से बढ़कर एक हैं'।[2]

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान भौतिकतावादी मनुष्य विज्ञान एवं तकनीकि के विकास के सम्मुख अपने आत्मिक उन्नति को विस्मृत करता जा रहा है। मशीन के वशीभूत

मनुष्य का मन एवं मस्तिष्क निरन्तर असंवेदनशील और निराभौतिकवादी बनता जा रहा है। उसका मन मस्तिष्क के अधीन होता जा रहा है। फलस्वरूप उसमें स्वार्थपरता की भावना प्रबल होती जा रही है। अपनों के बीच रहकर भी व्यक्ति अकेला होकर रह गया है। वह वन्य–जीव पशु–पक्षी, मनुष्य तो क्या अपने निजी सम्बन्धों भाई–बहन, देवर–भाभी यहाँ तक कि माता–पिता के प्रति भी संवेदनहीन होता जा रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि भौतिकतावादी सोच मनुष्य को मनुष्यत्व से नीचे ले जाकर पशुत्व के रसातल में डुबोती जा रही है। ऐसे परिवेश में यदि हम कबीर, सूर , तुलसी , जायसी एवं अन्य कवि व लेखकों के विचारों को पुनर्मूल्यांकित करके इसे जन सामान्य को अपने जीवन में उतारने हेतु अभिप्रेरित कर सके तो इस आगामी संकट से मुक्त हो सकते हैं। तुलसी के काव्य का सौन्दर्य चित्रण इसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है। इस सौन्दर्य चित्रण के माध्यम से मनुष्य में शील, सौन्दर्य, संवेदना, एवं आदर्शवादी मूल्यों को पुनर्प्रतिष्ठित करके मानवीय मूल्यो को विकसित करना हमारा मूल उत्स है।

साहित्यावलोकन

गोस्वामी तुलसीदास पर अब तक अनेक शोध प्रबन्ध, स्वतन्त्र ग्रन्थ, टीका ग्रन्थ, शोध पत्र, लेख आदि प्रकाशित हो चुके हैं। शोध प्रबन्धों में बलदेव प्रसाद का 'तुलसी दर्शन'[3], राजपति दीक्षित का 'तुलसी और उसका युग'[4], डॉ0 माता प्रसाद का 'तुलसीदास'[5] आदि प्रमुख ग्रन्थ हैं। स्वतन्त्र ग्रन्थों में परशुराम चतुर्वेदी कृत 'मानस की रामकथा'[6], रामनरेश त्रिपाठी द्वारा लिखित 'तुलसी और उनका काव्य'[7], रामचन्द्र द्विवेदी द्वारा लिखित 'तुलसी साहित्य रात्नाकर'[8] आदि ग्रन्थों में तुलसी की बहुमुखी प्रतिभा पर प्रकाश डाला गया है। प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने आलोच्य ग्रन्थ 'तुलसीदास' में उनके कृतित्व का वृहद विवेचन किया है। नवीनतम शोध–पत्रों अथवा लेखों के अन्तर्गत डॉ0 विदुषी शर्मा के शोधपत्र 'रामचरित मानस में भारतीय संस्कृति'[9], में मानस में प्रयुक्त दोहों और चौपाइयों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को संक्षेप में चित्रित किया गया है। नितीश शर्मा के लेख 'रामचरितमानस में तुलसी की काव्य कला'[10] तथा 'तुलसी की समन्वय भावना'[11] में काव्य कला के सौन्दर्य बोध तथा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व पारिवारिक समन्वय को चित्रित किया गया है। किन्तु महात्मा तुलसीदास की कृतियों में निहित सौन्दर्य बोध को संक्षिप्त और गहराई के साथ समसामयिक परिदृश्य में समझने की अवश्यकता आज भी है। उनके कृतियों की धार्मिक महत्ता तो है ही इससे भी अधिक उसमें अन्तर्निहित सर्वलोकहित चिन्तन की महत्ता है। उनकी कृतियों में निहित लोक मंगल की भावना केवल भारतीयता की सीमा में ही आबद्ध नहीं है अपितु समस्त संसार में मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में समर्थ है। अब तक प्रकाशित शोध–प्रबन्धों, पुस्तकों, शोधपत्रों अथवा लेखों की कड़ी में यह शोधपत्र महात्मा तुलसीदास के काव्य में निहित सौन्दर्य–बोध को संक्षिप्त और सरलता के साथ समझने में सहायक होगा।

रामचरितमानस में सौन्दर्य–विधान

हिन्दी साहित्य में मन्दाकिनी प्रवाहित करने वाले कवि चन्द्र, चूणामणि कविवर गोस्वामी तुलसीदास से भारत का जन–जन परिचित है।

कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई।।[10]

इस पुनीत लोक कल्याणकारी सद्भावना से अपने काव्य का आरम्भ करने वाले 'गोस्वामी तुलसीदास' ''कला के लिए कला'' के सिद्धान्त के समर्थक नहीं थे। वे कला को साधन मानते थे साध्य नहीं। गोस्वामी जी के अनुसार वही कविता, कीर्ति, और सम्पत्ति लोक कल्याणकारी होती है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो। 'उनके कवि कर्म का ध्येय केवल स्वान्तः सुखाय है। उनकी कविता स्वान्तः सुखाय के मार्ग से होती हुई परान्तः सुखाय तक की यात्रा तय करती है।'[11] रामचरितमानस धर्म की रसात्मक अनुभूति है, जो जीवन के प्रति अनुराग उत्पन्न करने वाली है, इसमें व्यक्ति धर्म, लोक धर्म, शील, शक्ति, सौन्दर्य, प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का सुन्दर समन्वय है। भारत विविध भाषा एवं संस्कृति का एक गुलदस्ता है। महात्मा तुलसीदास ने इसी विविधता में एकता का समन्वय किया है। हिन्दी–संस्कृत, राजा–प्रजा एवं विविध सामाजिक सम्बन्धों का जैसा समन्वय रामचरित में हुआ है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। वास्तव में रामचरितमानस ही उनकी कीर्ति का आधर स्तम्भ है।

यद्यपि स्वामी रामानन्द जी की शिष्य परम्परा के द्वारा राम भक्ति की परम्परा और राम की महिमा का गायन पूर्व से ही प्रचलित थी किन्तु हिन्दी साहित्य में इस भक्ति का परमोज्ज्वल प्रकाश विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोस्वामी जी की वाणी द्वारा ही स्फुरित हुआ। वे राम भक्ति परम्परा के मूर्धन्य कवि एवं भक्त हैं। उनका जन्म सोलहवीं शताब्दी में ऐसी परिस्थिति के मध्य हुआ जब समाज संघर्ष और संक्रमणशीलता के दौर से गुजर रहा था। दोहावली, कवितावली, गीतावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका, रामचरितमानस, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्नावली आदि रचनाएँ इनके काव्य प्रतिभा की परिचायक हैं।

रामचरितमानस अवधी भाषा में गोस्वामी जी द्वारा रचित हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के अनुसार ''तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना दो वर्ष सात माह छब्बीस दिन में संवत् 1633 (1576 ई0), मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष में राम विवाह के दिन पूर्ण किया था। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचन्द्र के निर्मल एवं विशद चरित्र का वर्णन किया है। यद्यपि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत रामायण को रामचरितमानस का आधार माना जाता है फिर भी दोनों महाकाव्यों के वर्णन शैली में अन्तर परिलक्षित होता है। जहाँ वाल्मीकि ने रामायण में राम को केवल एक सांसारिक व्यक्ति के रूप में दर्शाया है वहीं

तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम को भगवान विष्णु का अवतार माना है। रामचरितमानस को क्रमशः बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड कुल सात काण्डों में विभाजित किया गया है। इसमें छन्दों की संख्या के अनुसार बालकाण्ड सबसे बड़ा एवं किष्किन्धाकाण्ड सबसे छोटा काण्ड है।

रामचरितमानस का प्रारम्भ तुलसीदास ने वाणी और गणेश की वन्दना[12] से किया है। इसमें इन्होंने भक्ति को ज्ञान और योगमार्ग से श्रेष्ठ घोषित किया है। भक्ति के मर्यादा रूप को तुलसीदास स्वीकार करते हैं। दास्य भक्ति ही उनके समर्पण का मूल आधार है, वे कहते हैं–

सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।।
भजहु राम पद पंकज, अस सिद्धान्त विचारि।। [13]

रामचरितमानस में हनुमान, भरत और लक्ष्मण की राम के प्रति भक्ति दास्य भक्ति का अप्रतिम उदाहरण है। इसमें मानवीय सहानुभूति और व्यापक करुणा का भाव विद्यमान है। यह भक्ति जाति–धर्म आदि के कारण किसी भी मनुष्य का बहिष्कार करती।

तुलसी ने रामचरितमानस में जीवन दर्शन और मानवीय मूल्यों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। जीवन के नवनिर्माण में उनकी व्याकुलता ने ही उन्हें जीवन के सम्बन्ध में चिन्तन करने और परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले तत्त्वों का समाहार करने की ओर प्रवृत्त किया। उन्होंने शास्त्र को पुस्तक के पन्नों से निकालकर जीवन में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया–

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

अथवा

जे न मित्र दुःख होहि दुखारी।
तिन्हहिं विलोकत पातक भारी।।[14]

ये पंक्तियॉ तुलसी द्वारा मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। आचार्य शुक्ल ने पूर्णतः उचित कहा है कि–''रामचरितमानस के सौन्दर्य द्वारा तुलसीदास जी ने जनता को लोकधर्म की ओर जो फिर से आकर्षित किया , वह निष्फल नहीं हुआ वैरागियों का सुधार चाहे उससे न हुआ हो पर परोक्ष रूप से साधारण गृहस्थ जनता की प्रवृत्ति का बहुत कुछ संस्कार हुआ।''

गोस्वमी तुलसीदास ने लोकमंगल की साधना के पथ पर चलकर लोकधर्म का निर्वाह किया। इसी लोकधर्म एवं आदर्श समाज के प्रतिष्ठापनार्थ वे राम के जीवन के संघर्षों और प्रयत्नों को बड़ी कुशलता से चित्रित करते हैं। राम का यही लोक मंगल आदर्श समस्त समाज का पथ प्रदर्शक बना।

रामचरितमानस में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के अनुभूतियों, भावों तथा संवेगों को मनोरम एवं रसानुकूल अभिव्यक्ति प्रदान किया गया है। तुलसी का भाव सौन्दर्य सचमुच अद्भुत है। तुलसी का प्रादुर्भाव हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में किसी चमत्कार से कम नहीं है। हिन्दी काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में पहली बार परिलक्षित होता है। उनकी काव्य दृष्टि ने सम्पूर्ण मनोभावों एवं मानसिक व्यापारों को समाहित कर लिया है। जहाँ **एक ओर वे एक भक्त के दैन्य भाव को लेकर भक्ति के पूर्ण परिपाक में समर्थ हुए हैं वहीं दूसरी ओर वे सामाजिक सन्दर्भों में कर्तव्य मार्ग का सौन्दर्य दिखाकर मुग्ध भी करते हैं।** राम कथा के जितने मार्मिक स्थलों की पहचान गोस्वामी जी को है उतनी किसी अन्य कवि को नहीं। भावों की मर्मस्पर्शिता, रसानुभूति की तन्मयता आदि सभी दृष्टियों से सम्पूर्ण रामकाव्य परम्परा में रामचरितमानस अद्वितीय है।

व्यक्ति और परिवार आदर्श समाज की आधारशिलाएँ **हैं। सीता आदर्श पत्नी हैं, कौशल्या आदर्श माता, लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई, हनुमान आदर्श सेवक हैं और सुग्रीव आदर्श सखा हैं।** ये सभी सामाजिक सम्बन्धों के एक सूत्र हैं जिससे स्वस्थ समाज की संरचना होती है। तुलसी को गृहस्थ जीवन और समाज की गहराइयों का गहन ज्ञान था। उन्होंने राम के माध्यम से आदर्श पुत्र , आदर्श शिष्य, आदर्श मित्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पति, आदर्श प्रजाहितकारी शासक का स्वरूप प्रस्तुत किया है। कोई भी ऐसी राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याएँ नहीं हैं जिनका समाधान रामचरितमानस में सुलभ न हो। संक्षेप में कहें तो रामचरितमानस व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक आदर्शों का खजाना है।

अभिव्यंजना सौन्दर्य की दृष्टि से सम्पूर्ण राम काव्य परम्परा में रामचरितमानस सर्वश्रेष्ठ है। प्रबन्ध कौशल की जो पटुता रामचरितमानस में दीख पड़ती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कथा वस्तु के सम्यक विन्यास एवं प्रबन्ध की अन्य सभी कसौटियों पर मानस पूरी तरह खरा उतरता है। भामह और रुद्रट की भाँति तुलसी ने भी शब्द और अर्थ की अभिन्नता को काव्य के लिए श्रेयष्कर माना है। उनकी मान्यता है कि भाषा कवि का सच्चा बल होता है–

कविहि अरथ आखर बलु साचा।
अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा।।[15]

थोड़ा शब्दों में अधिक अर्थाभिव्यक्ति तुलसी को अधिक प्रिय है–

'अरथ अमित अति आखर थोरे'। [16]

रामचरितमानस भक्ति के दिव्य **रस** से ओतप्रोत है। यद्यपि कविता करना तुलसी का साध्य नही है उनका साध्य तो केवल और केवल भक्ति ही है फिर भी काव्यगत सौन्दर्य की दृष्टि से मानस में कोई कमी नही है। इसमें सभी रसों का कलात्मक चित्रण है। गोस्वामी जी की मानव मन के अन्तः स्थल तक पहुँच थी। वे सभी अवस्थाओं एवं परिस्थितियों में मानव हृदय की सूक्ष्म मनोवृत्तियों के सफल जानकार थे। वात्सल्य, वीर,[17] करुण, संयोग[18], वियोग[19], श्रृंगार, हास्य आदि रसों का अवसरानुकूल प्रयोग किया गया है।

रामचरितमानस में **अलंकारों** की भी कोई कमी नही है। तुलसीदास केवल अलंकारों के पीछे कभी भागते नही हैं, बल्कि उन्होंने अलंकारों का प्रयोग भावों के उत्कर्ष को दिखाने, वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक

तीव्र अनुभव कराने के लिये किया है । उन्होंने उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्त, सन्देह, प्रतीप, व्यतिरेक, परिणाम, परिसंख्या, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का अधिकार पूर्वक प्रयोग किया है।

मानस की रचना तुलसीदास ने जिस महा उद्देश्य को दृष्टि में रखकर की उसी के अनुरूप उन्होंने उसके काव्यरूप और भाषा के साथ–साथ छन्द–विधान का भी चयन किया है। लोक भाषा में लोकप्रिय पौराणिक शैली का प्रबन्ध काव्य लिखने के लिये आवश्यक भी था।

रामचरितमानस की प्रबन्धात्मकता और सौन्दर्य सौष्ठव की वृद्धि में छन्दों की भूमिका कम नही है। गोस्वामी जी छन्दों का प्रयोग करने में सिद्धस्त हैं। दोहा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका, अनुष्टुप, इन्द्रपज्रा, तोटक, भुजंगप्रयात, मालिनी, वसन्ततिलका, वंशस्थ आदि का प्रयोग मानस में जितना सुव्यवस्थित और मानकानुकूल किया गया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानस के धर्म, दर्शन, रचना विवेचन, काव्य–सौन्दर्य, चरित्र–चित्रण, वस्तुविन्यास, प्रबन्ध–तत्त्व एवं भाषा–शैली, छन्द और अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों पर गोस्वामी तुलसीदास का असाधारण अधिकार था। वे संस्कार सम्पन्न महापुरुष और भावुक भक्त थे। उनके रामचरितमानस में आध्यात्म, धर्म–दर्शन, नीति तथा भक्ति कथावस्तु के साथ इस तरह सम्पृक्त हो गये हैं कि मानस महाकाव्य से भी महान् वस्तु बन गया है। रामचरितमानस के सौन्दर्य–सौष्ठव का वैशिष्ट्य इस बात में है कि वह तुलसी के विराट व्यक्तित्व एवं महान साधना का महानतम् फल है। मानस से प्रभावित होकर विन्सेन्ट स्मिथ आदि पाश्चात्य विद्वान तुलसी को '*सम्राट अकबर से भी महान*' बताते हैं, नाभादास '*कलिकाल का बाल्मीकि*' कहते हैं और ग्रियर्सन इन्हें' *बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक*' कहते हैं। संक्षेप में रामचरितमानस महात्मा तुलसी की सर्वतोमुखी प्रतिभा का सुन्दरतम् निदर्शन है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *मा निषाद प्रतिष्ठाम् त्वमगमः शाश्वती समा,*
   यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी, काममोहिताम्।
   महर्षि बाल्मीकि– रामायण, बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक–15, गीता प्रेस, गोरखपुर, उ0प्र0
2. *goswami tulsidas ki rachnayen ignca.nic.in/coilnet/tulsi003.htm*
3. *हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 1942*
4. *ज्ञानमण्डल लिमिटेड प्रकाशन, वाराणसी, 1953*
5. *लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005*
6. *किताब महल प्रकाशन, 1946*
7. *राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1976*
8. *सूर्योदय साहित्य मन्दिर, हैदराबाद, 1986*
9. *11- August, 2017 http://www.hindifriend.com/2017/08/blog-post_17.html*
   8 sep.2017, http://www.hindifriend.com/2017/09/blog-post_8.htm
   9- 11 jan.2018, http://educationalvidushi.blogspot.com/2018/01/blog-post.html
10. *वर्मा, डॉ0 रामाश्रय 'अखिलेश', (प्रथम संस्करण–2005), काव्य के स्वरूप, अलका प्रकाशन, कानपुर, 1/46/6, पृष्ठ–43*
11. *स्वन्तः सुखय तुलसी रघुनाथ गाथा–*
    भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनेति।।
    तुलसीदास, गोस्वामी–रामचरित मानस, बालकाण्ड–प्रथम सोपान, श्लोक–7, गीता प्रेस प्रकाशान, गोरखपुर, उ0प्र0
12. *वर्णनामर्थसंघानां रंजानां छन्दसामपि,*
    मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।
    तुलसीदास, गोस्वामी–रामचरित मानस, बालकाण्ड–1/1/1, गीता प्रेस प्रकाशान, गोरखपुर, उ0प्र0
13. *सिंह, ओमप्रकाश, सम्पादक,(2007), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ग्रन्थावली, खण्ड–1, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृष्ठ–389*
14. *सिंह, ओमप्रकाश, सम्पादक,(2007), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ग्रन्थावली, खण्ड–1, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृष्ठ–366*
15. *तुलसीदास, गोस्वामी, रामचरित मानस, 1/18, गीता प्रेस प्रकाशान, गोरखपुर, उ0प्र0*
16. *तुलसीदास, गोस्वामी, रामचरित मानस, 1/18, गीता प्रेस प्रकाशान, गोरखपुर, उ0प्र0*
17. *सुनहुँ भानुकुल पंकज भानू। कहउ सुभाव न कछु अभिमानू।।*
    जौ तुम्हारि अनुसासन पावौं।कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं।।
    काचे घटि जिमि डारौ फोरी। सकौ मेरु मूलक इव तोरी।।
    तव प्रताप मो कह भगावाना।का बापुरो पिनाक पुराना।।
    तुलसीदास, गोस्वामी, रामचरित मानस, 1/252/2–3, गीता प्रेस प्रकाशान, गोरखपुर, उ0प्र0
18. *खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि। वही, 2/124/4*
19. *हा गुन खान जानकी सीता।रूप सील व्रत नेम पुनीता।।*
    हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।तुम्ह देखी सीता मृग नयनी।। 3/29/4–5